श्रीदुर्गासप्तशती

पावन दैवीय पाठ

(संक्षिप्त)

श्रीदुर्गासप्तशती

पावन दैवीय पाठ

(संक्षिप्त)

प्रकाशक

नारायण शक्तिपीठ

संस्करण : सितंबर 2018

विशेष संदेश

श्रीदुर्गासप्तशती के इस पावन दैवीय पाठ को प्रकाशित करने का एकमात्र उद्देश्य जनमानस को मां दुर्गा का शक्तिशाली और सरल पाठ प्रदान करना है। वर्षों के तप और ब्राह्मणों व विद्वानों की राय के बाद यह पावन दैवीय पाठ श्रीदुर्गासप्तशती के अंगों का विशेष शक्तिशाली, सरल व संक्षिप्त प्रारूप है। जो इस कृपा और सुख से वंचित थे वे वर्षों से इस दुर्लभ पावन दैवीय पाठ से लाभान्वित होने की प्रार्थनाएं कर रहे थे लेकिन संस्कृत के दुष्कर पाठ के कारण ऐसा संभव नहीं हो पा रहा था। ऐसे श्रद्धालुओं के लिए मां दुर्गा का पावन, सरल दैवीय पाठ निश्चित व अद्‌भुत रूप से कल्याणकारी होगा, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

ऐसा शास्त्रोक्त विधान है कि इस पवित्र और दुर्लभ पावन दैवीय पाठ को करते समय श्रद्धालु भक्तिभाव व प्रेमपूर्वक अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण करें तो अच्छा है। मां भगवती की साक्षात कृपा का यह प्रारूप जन्मों की तपस्या के बाद मिलता है इसलिए जब तक यह दैवीय पाठ पूरा न हो तब तक बीच में इसे बंद न करें तो उचित है।

इस महाग्रंथ के नित्य पाठ से समस्त कामनाओं की सिद्धि प्राप्त होती है और मनुष्य अपने तन, मन, धन के कष्टों से पूर्णतः मुक्त होकर मां दुर्गा की साक्षात कृपा का अधिकारी बन जाता है। जो लोग श्रीदुर्गासप्तशती का पूर्ण पाठ करने में असमर्थ हैं उनकी बारम्बार की प्रार्थना को सहज स्वीकार करते हुए विश्व संत व परम श्रद्धेय महामंडलेश्वर 1008 ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी ने पहली बार श्रीदुर्गासप्तशती का संक्षिप्त प्रारूप प्रदान कर जनमानस को कृतार्थ किया है जिसके लिए हम इनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन करते हैं।

अब इस संक्षिप्त पाठ को वे भाई बहन भी बड़ी सहजता व सरलता से कर सकते हैं जो संस्कृत के ज्ञान से अनभिज्ञ हैं। जो भाई बहन पूर्णरूप से श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ करवाना चाहते हैं वे उसी नियम के अनुसार योग्य ब्राह्मणों द्वारा मूल पूर्ण पुस्तक से पाठ करवाएं, जिस प्रकार शास्त्रों में वर्णित है। मां दुर्गा का यह अद्भुत प्रारूप करोड़ों गुना प्रभावशाली व कल्पनातीत है। इस पावन दैवीय पाठ से ही मां भगवती की कृपा प्राप्त होती है और समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इस दैवीय पाठ से करोड़ों लोगों का जीवन धन्य हो गया है। भगवान शिव का कथन है कि यह दुर्लभ शास्त्रोक्त रहस्य अत्यंत गुप्त और देवताओं के लिए भी दुर्लभ है अतः इसे गुप्त रखना चाहिए। इसका पाठ करने से समस्त दुर्लभ ज्ञान की प्राप्ति होती है। अन्य किसी प्रकार की पूजा पाठ व जप करने वाले स्त्री पुरुष भी यदि इस शास्त्रोक्त प्रारूप का पाठ करें तो वे पूर्णरूप से कल्याण के भागी होते हैं। ऐसे स्त्री पुरुषों को अन्य पाठ पूजा व किसी साधन के उपयोग की आवश्यकता नहीं रहती। मां दुर्गा के इस कल्याणमयी पाठ से जो पुण्य प्राप्त होता है उसकी कभी समाप्ति नहीं होती। किन्तु अन्य प्रकार के जप या पाठ के पुण्य की समाप्ति हो जाती है। यह कथन साक्षात भगवान शिव का है अतः इसे यथार्थ ही मानना चाहिए।

आपकी सुविधा के लिए यह संदेश दिया जा रहा है कि यदि आप श्रीदुर्गासप्तशती का पावन दैवीय पाठ संस्कृत भाषा में करने में समर्थ न हों तो आप हिन्दी में भी पाठ करके मां दुर्गा की कृपा प्राप्त कर सकते हैं।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
पाठ की विधि	5
श्री सप्तश्लोकी दुर्गा	9
श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्	13
श्री देव्याः कवचम्	18
श्री अर्गलास्तोत्रम्	32
श्री कीलकम्	39
श्री दुर्गा द्वात्रिंश-नाममाला	44
श्री सिद्धकुंजिकास्तोत्रम्	48
क्षमा प्रार्थना	52
श्री अम्बा जी की आरती	55
श्री देवी जी की आरती	57

पाठ का शास्त्रोक्त व सरल विधान

पाठ को संस्कृत, हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी या किसी भी एक भाषा में कर सकते हैं। सबसे पहले आप पाठ का कुंजी मंत्र, जोकि परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने आपको समागम में प्रदान किया है, उसे एक बार जाप करें। फिर प्रभु कृपा पत्रिका या इसके अंग्रेजी व पंजाबी संस्करण में श्रीदुर्गासप्तशती से लिया गया संक्षिप्त पावन दैवीय पाठ का जो कुंजी मंत्र (निष्कीलन मंत्र) दिया गया है उसे एक बार जाप करें। इसके बाद शुद्ध होने की प्रक्रिया के मंत्र करें। इसके चार मंत्र हैं। हर मंत्र को बोलने के बाद किसी भी शुद्ध पात्र या आचमनी में जल लेकर चम्मच से जल को मुंह में डालें। शुद्ध होने के चौथे मंत्र को दोबारा बोलते हुए चम्मच में जल भरकर अपनी बांई ओर से दांई ओर हाथ ले जाकर उसे भूमि पर डाल दें। इसके बाद श्रद्धा अनुसार धनराशि के साथ संकल्प प्रक्रिया की प्रार्थना एक बार करें। फिर मां दुर्गा के दैवीय पाठ की निष्कीलन प्रक्रिया करें जिसमें तीन मंत्र हैं। इसमें **पहला मंत्र 7 बार, दूसरा मंत्र 21 बार तथा तीसरा मंत्र 7 बार जाप करें।**

पहले स्नान करके पवित्र हो लें। पीले ऊनी आसन पर पाठ करने से पहले अभिमंत्रित जल का छिड़काव कर बैठने के स्थान की शुद्धि करें साथ में शुद्ध जल रख लें। मां दुर्गा का दैवीय पावन ग्रंथ श्रद्धा से अभिमंत्रित रियाल पर रखें। जो सनातन मर्यादा को मानने वाले हैं वे माथे पर अपनी रुचि के अनुसार चंदन भस्म अथवा रोली लगा लें तथा शिखा बांध लें। अन्य मत को मानने वाले अपनी सहजता से पाठ विधि कर सकते हैं। पाठ से पहले प्रातःकाल पीला गाऊन तथा संध्या के समय सफेद गाऊन धारण करें। अगर गाऊन धारण नहीं कर सकते तो उसे अपने पास या गोद में रख लें। प्रातःकाल का पाठ पूर्व दिशा तथा सायंकाल का पाठ उत्तर दिशा की ओर मुंह करके पाठ करें। वातावरण शुद्ध करने के लिए गाय के शुद्ध घी, सरसों या तिल के तेल का दीपक

जलाएं एवं चंदन, गुग्गल, लोबान व धूपबत्ती की धूनी पूरे घर में दें। पाठ के पश्चात जल को पौधों में डाल दें।

निम्न चार मंत्र शुद्धि के लिए हैं अतः इनका पाठ अवश्य करें।

ॐ ऐं आत्म तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
ॐ ह्रीं विद्या तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥
ॐ क्लीं शिव तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्व तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥

पुस्तक पूजा का मंत्र-

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

भावार्थः हे देवी आपको नमस्कार है। हे महादेवी, हे शिवा, आपको निरंतर बारंबार प्रणाम है। हे प्रकृतिस्वरूपा, हे कल्याणी, कल्याण स्वरूपी देवी, हम नियम पूर्वक आपको प्रणाम करते हैं।

हाथ में जल, चावल, फूल व फल लेकर संकल्प करें। अब गणपति भगवान का पूजन करें। भगवान गणपति की 6 इंच से छोटी किसी भी धातु की मूर्ति लें। अगर मूर्ति न मिले तो सुपारी को भगवान गणपति का प्रतीक मान लें।

सबसे पहले जल छिड़कें, फिर सिंदूर या चंदन का तिलक कर दें। इसके पश्चात फूलों व धूप दीप से पूजन करके इसका पाठ करें। इसके बाद **ॐ गुरुवे नमः तथा ॐ भगवान श्री गणेशाय नमः का 9-9 बार पाठ करें।** अब श्रीगणपतिस्तोत्र भास्कर का पाठ करें।

यदि आपके पास इस पावन पुस्तक का पूरा पाठ करने का समय नहीं है तो आप केवल 'श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्' (पेज-13) तथा 'श्रीसिद्धकुंजिकास्तोत्रम्' (पेज-48) का पाठ ही कर सकते हैं। इसके बाद क्षमा प्रार्थना (पेज-52) कर लें। इससे पहले आपको परम पूज्य सद्गुरुदेव द्वारा दिए गए निष्कीलन रहस्य के तीनों मंत्रों का एक-एक बार पाठ करना है।

श्रीगणपतिस्तोत्र

ॐ काररूपं वरदं भक्तानाम् आर्तिनाशनम् ।
मंगलम् मंगलानाम् च वन्दे तं गणनायकम् ॥1॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥2॥
यत् नाम ग्रहणाद् देवा अपि मंगल माप्नुवन् ।
ऋद्धि सिद्ध्योः प्रदातारं तं गणेशम् उपास्महे ॥3॥
नमस्तस्मै गणेशाय ब्रह्म विद्या प्रदायिने ।
यस्या गस्त्यायते नाम विघ्न सागर शोषणे ॥4॥

भक्तों के सर्व दुख हरने वाले और मन इच्छित वर देने वाले एवं सभी मंगल कार्यों को मंगलमय करने वाले ओंकार स्वरूप देवता भगवान श्री गणेश जी की हम वन्दना करते हैं ॥1॥

वक्र सूंड व विशाल आकार वाले और करोड़ो सूर्यों के तेज वाले, गजानन देवता, आप ही सभी शुभ कार्यों में विघ्न दूर करने वाले हैं ॥2॥

जिनके नाम मात्र को ग्रहण करने से देवता भी मंगलमय अनुभूति को प्राप्त होते हैं। ऋद्धि और सिद्धि के दाता ऐसे देवता श्री गणेश जी की हम उपासना करते हैं ॥3॥

जिनके नाम जपने से अगस्त्य मुनि ने विघ्न करने वाले सम्पूर्ण समुद्र को पी लिया, ऐसे ब्रह्मविद्या के दाता को नमस्कार करते हैं ॥4॥

**स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत् पाद पंकज स्मरणम् ।
वासर मणिरिव तमसाम् राशीन् नाशयति विघ्नानाम् ।।5।।**

जय जय श्री गणेश स्तोत्रम्

उन गजवदन देव की जय हो, जिनके चरण कमल का स्मरण सम्पूर्ण विघ्न समूह को इस प्रकार नष्ट कर देता है जैसे सूर्य के उदित होने से अंधकार मिट जाता है ।।5।।

इसके बाद सभी देवी–देवताओं और अपने इष्टदेव का पूजन करें। फिर अपने गुरु का ध्यान करें जिन्होंने आपको दिव्य मंत्र प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त अपने माता पिता का ध्यान भी करें। इसके बाद यह बोलें–

**गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।**

गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही महेश है और गुरु ही साक्षात परमपिता परमेश्वर है। ऐसे गुरु को दण्डवत प्रणाम है।

श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा

भगवान शिव उवाच–

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्य विधायिनी ।
कलौ हि कार्य सिद्ध्यर्थम् उपायं ब्रूहि यत्नतः ॥

देव्युवाच–

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्ट साधनम् ।
मया तवैव स्नेहेना प्यम्बा स्तुतिः प्रकाश्यते ॥

(निम्नलिखित विनियोग मंत्र को पढ़ने से पूर्व हाथ में जल ले लें।)

ॐ अस्य श्रीदुर्गा सप्तश्लोकी स्तोत्र मन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, श्रीदुर्गा प्रीत्यर्थं सप्त श्लोकी दुर्गापाठे विनियोगः।

(अब विनियोग मंत्र पढ़ने के बाद जल को पृथ्वी पर छोड़ दें।)

भगवान शिवजी बोले–हे देवि! आप भक्तों के लिए सुलभ हो और समस्त कर्मों का विधान करने वाली हो। कलियुग में कामनाओं की सिद्धि हेतु यदि कोई उपाय हो तो उसे अपनी वाणी द्वारा सम्यक रूप से व्यक्त करो।

देवी ने कहा–हे देव! आपका मेरे ऊपर बहुत स्नेह है। कलियुग में समस्त कामनाओं को सिद्ध करने वाला जो साधन है वह बतलाऊंगी, सुनो! उसका नाम है 'अम्बास्तुति'।

(निम्नलिखित विनियोग मंत्र को पढ़ने से पूर्व हाथ में जल ले लें।)

ॐकार रूपी परमात्मा का स्मरण करके इस श्रीदुर्गा सप्तश्लोकी स्तोत्र मन्त्र जिसके ऋषि नारायण हैं, अनुष्टुप् छंद है, श्रीमहाकाली, महालक्ष्मी व महासरस्वती देवता हैं, उसका श्रीदुर्गा की प्रसन्नता के लिए सप्तश्लोकी दुर्गा पाठ में विनियोग किया जाता है।

(अब विनियोग मंत्र पढ़ने के बाद जल को पृथ्वी पर छोड़ दें।)

ॐ ज्ञानिना मपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादा कृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥1॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्य दुःख भय हारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता ॥2॥
सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥3॥

वे भगवती महामाया देवी ज्ञानियों के भी चित्त को बलपूर्वक खींचकर मोह में डाल देती हैं ॥1॥

मां दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुख, दरिद्रता और भय हरने वाली देवि! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा ही दयार्द्र रहता हो ॥2॥

नारायणी! आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली एवं गौरी हो। आपको नमस्कार है ॥3॥

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।4।।
सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्व शक्ति समन्विते ।
भयेभ्य: त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।।5।।
रोगान शेषान् पहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलान् भीष्टान् ।
त्वाम् आश्रितानां न विपन्नराणां
त्वाम् आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति ।।6।।

शरण में आए हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सबकी पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवी! आपको नमस्कार है ।।4।।

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से संपन्न दिव्य रूपा दुर्गे देवी! सब भयों से हमारी रक्षा करो, आपको नमस्कार है ।।5।।

देवी! आप प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग आपकी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं। आपकी शरण में गए हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं ।।6।।

सर्वा बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्य खिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्य मस्मद् वैरि विनाशनम् ।।7।।

सर्वेश्वरि! आप इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शांत करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो ।।7।।

जय जय श्री सप्तश्लोकी दुर्गा

श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

ईश्वरोवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।
यस्य प्रसाद मात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥1॥
ॐ सती साध्वी भव-प्रीता भवानी भवमोचनी ।
आर्या दुर्गा जया च आद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥2॥
पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपा ।
मनो बुद्धि अहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥3॥
सर्वमंत्रमयी सत्ता सत्यानंद-स्वरूपिणी ।
अनंता भाविनी भाव्या भव्या अभव्या सदागतिः ॥4॥

भगवान शंकरजी पार्वती जी से कहते हैं-कमलानने! अब मैं अष्टोत्तरशत अर्थात 108 नामों का वर्णन करता हूं, सुनो; जिनके प्रसाद, पाठ या श्रवण मात्र से परम साध्वी भगवती दुर्गा प्रसन्न हो जाती हैं।।1।।

ॐ सती, साध्वी, भवप्रीता, भवानी, भवमोचनी, आर्या, दुर्गा, जया, आद्या, त्रिनेत्रा, शूलधारिणी ।।2।।

पिनाकधारिणी, चित्रा, चण्डघण्टा, महातपा, मन, बुद्धि, अहंकारा, चित्तरूपा, चिता, चिति ।।3।।

सर्वमंत्रमयी, सत्ता, सत्यानंद-स्वरूपिणी, अनंता, भाविनी, भाव्या, भव्या, अभव्या, सदागति ।।4।।

शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्ष-यज्ञ-विनाशिनी ॥5॥
अपर्णा अनेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
पट्टाम्बर-परीधाना कल-मंजीर-रंजिनी ॥6॥
अमेय विक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।
वनदुर्गा च मातंगी मतंग-मुनि-पूजिता ॥7॥
ब्राह्मी माहेश्वरी च ऐन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥8॥
विमला उत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।
बहुला बहुल प्रेमा सर्व-वाहन-वाहना ॥9॥

शाम्भवी, देवमाता, चिन्ता, रत्नप्रिया, सर्वविद्या, दक्षकन्या, दक्ष-यज्ञविनाशिनी ॥5॥

अपर्णा, अनेकवर्णा, पाटला, पाटलावती, पट्टाम्बर-परीधाना, कलमंजीररंजिनी ॥6॥

अमेय विक्रमा, क्रूरा, सुन्दरी, सुरसुन्दरी, वनदुर्गा, मातंगी, मतंगमुनिपूजिता ॥7॥

ब्राह्मी, माहेश्वरी, ऐन्द्री, कौमारी, वैष्णवी, चामुण्डा, वाराही, लक्ष्मी, पुरुषाकृति ॥8॥

विमला, उत्कर्षिणी, ज्ञाना, क्रिया, नित्या, बुद्धिदा, बहुला, बहुलप्रेमा, सर्ववाहनवाहना ॥9॥

निशुंभ शुंभहननी महिषासुर-मर्दिनी ।
मधु-कैटभ-हन्त्री च चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी ॥10॥
सर्वासुर-विनाशा च सर्व-दानव-घातिनी ।
सर्व-शास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्र-धारिणी तथा ॥11॥
अनेक-शस्त्र-हस्ता च अनेकास्त्रस्य-धारिणी ।
कुमारी च एककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥12॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥13॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिः तपस्विनी ।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥14॥

निशुंभ शुंभहननी, महिषासुरमर्दिनी, मधुकैटभहन्त्री, चण्डमुण्डविनाशिनी ॥10॥

सर्वासुर-विनाशा, सर्वदानवघातिनी, सर्वशास्त्रमयी, सत्या, सर्वास्त्रधारिणी ॥11॥

अनेकशस्त्रहस्ता, अनेकास्त्रधारिणी, कुमारी, एक्-कन्या, कैशोरी, युवती, यति ॥12॥

अप्रौढा, प्रौढा, वृद्धमाता, बलप्रदा, महोदरी, मुक्त-केशी, घोररूपा, महाबला ॥13॥

अग्निज्वाला, रौद्रमुखी, कालरात्रि, तपस्विनी, नारायणी, भद्रकाली, विष्णुमाया, जलोदरी ॥14॥

शिवदूती कराली च अनंता परमेश्वरी ।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥15॥
यः इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गा नाम शताष्टकम् ।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥16॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिन मेव च ।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥17॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेद् नाम शताष्टकम् ॥18॥
तस्य सिद्धिः भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैः अपि ।
राजानो दासतां यान्ति राज्य श्रियम् अवाप्नुयात् ॥19॥

शिवदूती, कराली, अनंता, परमेश्वरी, कात्यायनी, सावित्री, प्रत्यक्षा, ब्रह्मवादिनी ॥15॥

देवी पार्वती! जो प्रतिदिन दुर्गाजी के इस अष्टोत्तरशतनाम का पाठ करता है, उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं है ।16॥

वह धन, धान्य, पुत्र, स्त्री, घोड़ा, हाथी, धर्म आदि चार पुरुषार्थ तथा अंत में सनातन मुक्ति भी प्राप्त कर लेता है ॥17॥

कुमारी का पूजन और देवी सुरेश्वरी का ध्यान करके परा भक्ति के साथ उनका पूजन करे, फिर अष्टोत्तरशत नाम का पाठ आरंभ करे ॥18॥

देवि! जो ऐसा करता है, उसे सब श्रेष्ठ देवताओं से भी सिद्धि प्राप्त होती है। राजा उसके दास हो जाते हैं। वह राज्य लक्ष्मी को

गोरोचना लक्तक कुंकुमेन

सिन्दूर कर्पूर मधुत्रयेण ।

विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो

भवेत् सदा धारयते पुरारिः ॥20॥

भौमा वास्या निशाम् अग्रे चन्द्रे शतभिषां गते ।

विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम् ॥21॥

प्राप्त कर लेता है ॥19॥

गोरोचन, लाक्षा, कुमकुम, सिंदूर, कपूर, घी, दूध, चीनी और मधु–इन वस्तुओं को एकत्र करके इनसे विधिपूर्वक यंत्र लिखकर जो विधिज्ञ पुरुष सदा उस यंत्र को धारण करता है, वह भगवान शिव के तुल्य हो जाता है ॥20॥

भौमवती अमावस्या की आधी रात में जब चंद्रमा शतभिषा नक्षत्र पर हों, उस समय इस स्तोत्र को लिखकर जो इसका पाठ करता है वह सम्पत्तिशाली होता है ॥21॥

जय जय श्री विश्वसारतन्त्रे

दुर्गा अष्टोत्तर शतनाम् स्तोत्रम्

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज ने आपको जो उत्कीलन, शापोद्धार, निष्कीलन और परिहार तथा मृत संजीवनी मंत्र का जो विशेष शास्त्रोक्त विधान बताया है उसे करने के बाद ही यह पाठ प्रारंभ करें। जिन्होंने यह शास्त्रोक्त विधान अब तक ग्रहण नहीं किया है वे इसे परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज से ग्रहण करके ही इसका पाठ करें। भगवान शिव का कथन है कि जो बिना शापोद्धार, परिहार व निष्कीलन के मां दुर्गा का पाठ करता है उसे उसी प्रकार सिद्धि नहीं मिलती जिस प्रकार जंगल में रोना निरर्थक माना जाता है। इस प्रकार भगवान शिव द्वारा शास्त्रोक्त विधि से पाठ करने के बाद ही मां भगवती की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

श्री देव्याः कवचम्

(इस विनियोग मंत्र को पढ़ने से पूर्व हाथ में जल ले लें।)

ॐ अस्य श्री चण्डी कवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अंग न्यासोक्त मातरो बीजम्, दिग्बन्ध देवताः तत्त्वम्, श्रीजगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशती पाठांगत्वेन जपे विनियोगः ।

(अब विनियोग मंत्र पढ़ने के बाद जल को पृथ्वी पर छोड़ दें।)

(इस विनियोग मंत्र को पढ़ने से पूर्व हाथ में जल ले लें।)

ॐकार-रूपी परमात्मा का स्मरण करके इस श्रीचण्डीकवच, जिसके ऋषि ब्रह्मा हैं, अनुष्टुप् छंद है, चामुण्डा देवता हैं, अंगन्यास में वर्णित माताएँ बीज हैं, दिग्बन्ध के देवता तत्त्व हैं, उसका श्रीजगदम्बा की प्रसन्नता के लिए सप्तशतीपाठ के अंग के रूप में जप-कार्य में विनियोग किया जाता है।

(अब विनियोग मंत्र पढ़ने के बाद जल को पृथ्वी पर छोड़ दें।)

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद् गुह्यं परमं लोके सर्व रक्षा करं नृणाम् ।
यन्न कस्यचिदा ख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥1॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्व भूतोपकारकम् ।
देव्याः तु कवचं पुण्यं तत् शृणुष्व महामुने ॥2॥
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्र-घण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥3॥

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेय जी ने कहा-पितामह! जो इस संसार में परम गोपनीय तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला है और जो अब तक आपने दूसरे किसी के सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये ॥1॥

ब्रह्मा जी बोले-ब्रह्मन! ऐसा साधन तो एक देवी का कवच ही है, जो गोपनीय से भी परम गोपनीय, पवित्र तथा सम्पूर्ण प्राणियों का उपकार करने वाला है। महामुने! उसे श्रवण करो ॥2॥

देवी के नौ स्वरूप हैं, जिन्हें 'नवदुर्गा' कहते हैं। उनके पृथक्-पृथक् नाम बतलाए जाते हैं। प्रथम नाम शैलपुत्री है। दूसरी का नाम ब्रह्मचारिणी है। तीसरा स्वरूप चन्द्रघण्टा के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी को कूष्माण्डा कहते हैं ॥3॥

पञ्चमं स्कन्द मातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महा गौरीति चाष्टमम् ॥4॥
नवमं सिद्धि-दात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तानि एतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥5॥
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रु मध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥6॥
न तेषां जायते किंचिद् अशुभं रणसंकटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोक दुःखभयं न हि ॥7॥
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान् न संशयः ॥8॥

पांचवीं दुर्गा का नाम स्कन्दमाता है। देवी के छठे रूप को कात्यायनी कहते हैं। सातवां कालरात्रि और आठवां स्वरूप महागौरी के नाम से प्रसिद्ध है ॥4॥

नवीं दुर्गा का नाम सिद्धिदात्री है। ये सब नाम सर्वज्ञ महात्मा वेद भगवान् के द्वारा ही प्रतिपादित हुए हैं ॥5॥

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, रणभूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, विषम संकट में फंस गया हो तथा इस प्रकार भय से आतुर होकर जो भगवती दुर्गा की शरण में आ गया हो॥6॥

युद्ध के समय संकट में पड़ने पर भी उनका कभी कोई अमंगल नहीं होता, उनके ऊपर कोई विपत्ति नहीं दिखाई देती। उन्हें शोक, दुख और भय की प्राप्ति नहीं होती ॥7॥

जिन्होंने भक्तिपूर्वक देवी का स्मरण किया है, उनका निश्चय ही अभ्युदय होता है। देवेश्वरि! जो आपका चिन्तन करते हैं, उनकी आप निःसंदेह रक्षा करती हो ॥8॥

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
ऐन्द्री गज समारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥9॥
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखि-वाहना ।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्म-हस्ता हरिप्रिया ॥10॥
श्वेत रूपधरा देवी ईश्वरी वृष-वाहना ।
ब्राह्मी हंस समारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥11॥
इत्येता मातरः सर्वाः सर्व योग समन्विताः ।
नाना भरण शोभाढ्या नाना रत्नोपशोभिताः ॥12॥

चामुण्डा देवी प्रेत पर आरूढ़ होती हैं। वाराही भैंसे पर सवारी करती हैं। ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है। वैष्णवी देवी गरुड पर ही आसन जमाती हैं ॥9॥

माहेश्वरी वृषभ पर आरूढ़ होती हैं। कौमारी का वाहन मयूर है। भगवान विष्णु की प्रियतमा लक्ष्मी देवी कमल के आसन पर विराजमान हैं और हाथों में कमल धारण किए हुए हैं॥10॥

वृषभ पर आरूढ़ ईश्वरी देवी ने श्वेत रूप धारण कर रखा है। ब्राह्मी देवी हंस पर बैठी हुई हैं और सब प्रकार के आभूषणों से विभूषित हैं ॥11॥

इस प्रकार ये सभी माताएं सब प्रकार की योगशक्तियों से सम्पन्न हैं। इनके सिवा और भी बहुत सी देवियां हैं, जो अनेक प्रकार के आभूषणों की शोभा से युक्त तथा नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं ॥12॥

दृश्यन्ते रथम् आरूढा देव्यः क्रोध समाकुलाः ।
शंखं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥13॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशम् एव च ।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शारंग मायुध मुत्तमम् ॥14॥
दैत्यानां देह नाशाय भक्तानाम् भयाय च ।
धारयन्त्या युधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥15॥
नमस्तेऽस्तु महा रौद्रे महा घोर पराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महा भय विनाशिनि ॥16॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भय वर्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्याम् अग्निदेवता ॥17॥

ये सम्पूर्ण देवियां क्रोध में भरी हुई हैं और भक्तों की रक्षा के लिए रथ पर बैठी दिखाई देती हैं। ये शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल और मूसल, खेटक और तोमर, परशु तथा पाश, कुन्त और त्रिशूल एवं उत्तम शार्गधनुष आदि अस्त्र-शस्त्र अपने हाथों में धारण करती हैं। दैत्यों के शरीर का नाश करना, भक्तों को अभयदान देना और देवताओं का कल्याण करना-यही उनके शस्त्र धारण का उद्देश्य है ॥13-15॥

महान् रौद्ररूप, अत्यन्त घोर पराक्रम, महान बल और महान् उत्साह वाली देवी! आप महान् भय का नाश करने वाली हो, आपको नमस्कार है ॥16॥

आपकी ओर देखना भी कठिन है। शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली जगदम्बिके! मेरी रक्षा करो। पूर्व दिशा में ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति) मेरी रक्षा करें। अग्निकोण में अग्निशक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्ग-धारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृग-वाहिनी ॥18॥
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूल-धारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेद् अधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥19॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शव-वाहना ।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥20॥
अजिता वाम पार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
शिखाम् उद्योतिनी रक्षेद् उमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥21॥

तथा नैर्ऋत्यकोण में खड्गधारिणी मेरी रक्षा करें। पश्चिम दिशा में वारुणी और वायव्य कोण में मृग पर सवारी करने वाली मृगवाहिनी देवी मेरी रक्षा करें ॥17-18॥

उत्तर दिशा में कौमारी और ईशान कोण में शूलधारिणी देवी रक्षा करें। ब्रह्माणि! आप ऊपर की ओर से मेरी रक्षा करो और वैष्णवी देवी नीचे की ओर से मेरी रक्षा करें ॥19॥

इसी प्रकार शव को अपना वाहन बनाने वाली चामुण्डा देवी दसों दिशाओं में मेरी रक्षा करें जया आगे से और विजया पीछे की ओर से मेरी रक्षा करें ॥20॥

वामभाग में अजिता और दक्षिण भाग में अपराजिता रक्षा करें। उद्योतिनी शिखा की रक्षा करें। उमा मेरे मस्तक पर विराजमान होकर रक्षा करें ॥21॥

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥22॥
शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वार वासिनी ।
कपोलौ कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शांकरी ॥23॥
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
अधरे च अमृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥24॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठ देशे तु चण्डिका ।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥25॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्व-मंगला ।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥26॥

ललाट में मालाधरी रक्षा करें और यशस्विनी देवी मेरी भौंहों का संरक्षण करें। भौंहों के मध्य भाग में त्रिनेत्रा और नथुनों की यमघण्टा देवी रक्षा करें ॥22॥

दोनों नेत्रों के मध्यभाग में शंखिनी और कानों में द्वारवासिनी रक्षा करें। कालिका देवी कपोलों की तथा भगवती शांकरी कानों के मूलभाग की रक्षा करें ॥23॥

नासिका में सुगन्धा और ऊपर के ओठ में चर्चिका देवी रक्षा करें। नीचे के ओठ में अमृतकला तथा जिह्वा में सरस्वती देवी रक्षा करें ॥24॥

कौमारी दांतों की और चण्डिका कण्ठ प्रदेश की रक्षा करें। चित्रघण्टा गले की घंटी की और महामाया तालु में रहकर रक्षा करें ॥25॥

कामाक्षी ठोढ़ी की और सर्वमंगला मेरी वाणी की रक्षा करें। भद्रकाली ग्रीवा में और धनुर्धरी पृष्ठवंश (मेरुदंड) में रहकर रक्षा करें ॥26॥

नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
स्कन्धयोः खड्‌गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥27॥
हस्तयोः दण्डिनी रक्षेद् अम्बिका चांगुलीषु च ।
नखान् शूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी ॥28॥
स्तनौ रक्षेद् महादेवी मनः शोक विनाशिनी ।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥29॥
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिष-वाहिनी ॥30॥
कट्यां भगवती रक्षेद् जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
जंघे महाबला रक्षेत् सर्वकाम-प्रदायिनी ॥31॥

कण्ठ के बाहरी भाग में नीलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकूबरी रक्षा करें। दोनों कंधों में खड्‌गिनी और मेरी दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी रक्षा करें ॥27॥

दोनों हाथों में दण्डिनी और अंगुलियों में अम्बिका रक्षा करें। शूलेश्वरी नखों की रक्षा करें। कुलेश्वरी कुक्षि अर्थात पेट में रहकर रक्षा करें ॥28॥

महादेवी दोनों स्तनों की और शोकविनाशिनी देवी मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय में और शूलधारिणी उदर में रहकर रक्षा करें ॥29॥

नाभि में कामिनी और गुह्यभाग की गुह्येश्वरी रक्षा करें। पूतना और कामिका लिंग की और महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करें ॥30॥

भगवती कटिभाग में और विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करें। सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाली महाबलादेवी दोनों पिण्डलियों की रक्षा करें ॥31॥

गुल्फयो र्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
पादांगुलीषु श्री रक्षेत् पादाधस्तल वासिनी ॥32॥
नखान् दंष्ट्रा कराली च केशान् च ऊर्ध्वकेशिनी ।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥33॥
रक्त मज्जा वसा मांसान्यस्थि मेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि काल रात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥34॥
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिः तथा ।
ज्वालामुखी नख ज्वाला मभेद्या सर्वसंधिषु ॥35॥

नारसिंही दोनों घुट्ठियों की और तैजसी देवी दोनों चरणों के पृष्ठभाग की रक्षा करें। श्रीदेवी पैरों की अंगुलियों में और तलवासिनी पैरों के तलुओं में रहकर रक्षा करें ॥32॥

अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखाई देने वाली दंष्ट्राकराली देवी नखों की और ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की रक्षा करें। रोमावलियों के छिद्रों में कौबेरी और त्वचा की वागीश्वरी देवी रक्षा करें ॥33॥

पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेद की रक्षा करें। आंतों की कालरात्रि और पित्त की मुकुटेश्वरी रक्षा करें॥34॥

मूलाधार आदि कमल-कोशों में पद्मावती देवी और कफ में चूडामणि देवी स्थित होकर रक्षा करें। नख के तेज की ज्वालामुखी रक्षा करें। जिसका किसी भी अस्त्र से भेदन नहीं हो सकता, वह अभेद्या देवी शरीर की समस्त संधियों में रहकर रक्षा करें ॥35॥

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेत् छायां छत्रेश्वरी तथा ।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेद् मे धर्मधारिणी ॥36॥
प्राणापानौ तथा व्यान-मुदानं च समानकम् ।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत् प्राणं कल्याण-शोभना ॥37॥
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
सत्त्वं रजः तमश्चैव रक्षेद् नारायणी सदा ॥38॥
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥39॥
गोत्र मिन्द्राणि मे रक्षेत् पशून् मे रक्ष चण्डिके ।
पुत्रान् रक्षेद् महालक्ष्मीः भार्यां रक्षतु भैरवी ॥40॥

ब्रह्माणि! आप मेरे वीर्य की रक्षा करें। छत्रेश्वरी छाया की तथा धर्मधारिणी देवी मेरे अहंकार, मन और बुद्धि की रक्षा करें।॥36॥

हाथ में वज्र धारण करने वाली वज्रहस्ता देवी मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान वायु की रक्षा करें। कल्याण से शोभित होने वाली भगवती कल्याणशोभना मेरे प्राण की रक्षा करें ॥37॥

रस, रूप, गन्ध, शब्द और स्पर्श-इन विषयों का अनुभव करते समय योगिनी देवी रक्षा करें तथा सत्त्वगुण, रजोगुण और तमो गुण की रक्षा सदा नारायणी देवी करें ॥38॥

वाराही आयु की रक्षा करें। वैष्णवी धर्म की रक्षा करें तथा चक्रिणी देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करें ॥39॥

इन्द्राणि! आप मेरे गोत्र की रक्षा करें। चण्डिके! आप मेरे पशुओं की रक्षा करो। महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करें और भैरवी

पन्थानं सुपथा रक्षेद् मार्गं क्षेमकरी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मी र्विजया सर्वतः स्थिता ॥41॥
रक्षाहीनं तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पाप-नाशिनी ॥42॥
पदम् एकं न गच्छेत्तु यदिच्छेद छुभात्मनः ।
कवचे नावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥43॥
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्व कामिकः ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
परमैश्वर्य मतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥44॥

पत्नी की रक्षा करें ॥40॥

मेरे पथ की सुपथा तथा मार्ग की क्षेमकरी रक्षा करें। राजा के दरबार में महालक्ष्मी रक्षा करें तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया देवी सम्पूर्ण भयों से मेरी रक्षा करें ॥41॥

देवि! जो स्थान कवच में नहीं कहा गया है, अतएव रक्षा से रहित है, वह सब आपके द्वारा सुरक्षित हो; क्योंकि आप विजयशालिनी और पापनाशिनी हो ॥42॥

यदि अपने शरीर का भला चाहे तो मनुष्य बिना कवच के कहीं एक पग भी न जाए-कवच का पाठ करके ही यात्रा करे।॥43॥

कवच के द्वारा सब ओर से सुरक्षित मनुष्य जहां-जहां भी जाता है, वहां-वहां उसे धन-लाभ होता है तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि करने वाली विजय की प्राप्ति होती है। वह जिस-जिस अभीष्ट वस्तु का चिन्तन करता है, उस-उस को निश्चय ही प्राप्त कर लेता है। वह पुरुष इस पृथ्वी पर तुलनारहित महान् ऐश्वर्य का

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ।
त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ।।45।।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।
यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ।।46।।
दैवी कला भवेत् तस्य त्रैलोक्यष्व पराजितः ।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्यु विवर्जितः ।।47।।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता विस्फोटकादयः ।
स्थावरं जंगमं चैव कृत्रिमं चापि यद् विषम् ।।48।।

भागी होता है ।।44।।

कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है। युद्ध में उसकी पराजय नहीं होती तथा वह तीनों लोकों में पूजनीय होता है ।।45।।

देवी का यह कवच देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। जो प्रतिदिन नियमपूर्वक तीनों संध्याओं के समय श्रद्धा के साथ इसका पाठ करता है, उसे दैवी कला प्राप्त होती है तथा वह तीनों लोकों में कहीं भी पराजित नहीं होता। इतना ही नहीं, वह अपमृत्यु अर्थात अकाल मृत्यु से रहित हो सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है ।।46-47।।

मकरी, चेचक और कोढ़ आदि उसकी सम्पूर्ण व्याधियां नष्ट हो जाती हैं। कनेर, भांग, अफीम, धतूरे आदि का स्थावर विष, सांप और बिच्छू आदि के काटने से चढ़ा हुआ जंगम विष तथा अहिफेन और तेल के संयोग आदि से बनने वाला कृत्रिम विष-ये सभी प्रकार के विष दूर हो जाते हैं, उनका कोई असर नहीं होता ।।48।।

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्र यन्त्राणि भूतले ।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाः चोप देशिकाः ॥49॥
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ।
अन्तरिक्ष चरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥50॥
ग्रह भूत पिशाचाः च यक्ष गन्धर्व राक्षसाः ।
ब्रह्मराक्षस वेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥51॥
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।
मानोन्नतिः भवेद् राज्ञस्तेजो वृद्धिकरं परम् ॥52॥

इस पृथ्वी पर मारण-मोहन आदि जितने आभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा इस प्रकार के जितने मंत्र, यंत्र होते हैं, वे सब इस कवच को हृदय में धारण कर लेने पर उस मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं। ये ही नहीं, पृथ्वी पर विचरने वाले ग्रामदेवता, आकाशचारी देवविशेष, जल के सम्बन्ध से प्रकट होने वाले गण, उपदेश मात्र से सिद्ध होने वाले निम्नकोटि के देवता, अपने जन्म के साथ प्रकट होने वाले देवता, कुलदेवता, माला (कण्ठमाला आदि), डाकिनी, शाकिनी, अन्तरिक्ष में विचरने वाली अत्यंत बलवती भयानक डाकिनियां, ग्रह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी हृदय में कवच धारण किए रहने पर उस मनुष्य को देखते ही भाग जाते हैं। कवचधारी पुरुष को राजा से सम्मान-वृद्धि प्राप्त होती है। यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला और उत्तम है ॥49-52॥

यशसा वर्धते सोऽपि कीर्ति मण्डित भूतले ।
जपेत् सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥53॥
यावद् भूमण्डलं धत्ते सशैल वन काननम् ।
तावत् तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्र पौत्रिकी ॥54॥
देहान्ते परमं स्थानं यत् सुरै रपि दुर्लभम् ।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादतः ॥55॥
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥ॐ॥56॥

जय जय श्री देव्या कवचम्

कवच का पाठ करने वाला पुरुष अपनी कीर्ति से विभूषित भूतल पर अपने सुयश के साथ-साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। जो पहले कवच का पाठ करके उसके बाद सप्तशती चण्डी का पाठ करता है, उसकी जब तक वन, पर्वत और काननों सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है, तब तक यहां पुत्र-पौत्र आदि संतान परम्परा बनी रहती है ।।53-54।।

फिर देह का अन्त होने पर पुरुष भगवती महामाया के प्रसाद से उस नित्य परम पद को प्राप्त होता है, जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है ।।55।।

वह सुन्दर दिव्य रूप धारण करता और कल्याणमय शिव के साथ आनन्द का भागी होता है ।।56।।

श्री अर्गलास्तोत्रम्

(इस विनियोग मंत्र को पढ़ने से पूर्व हाथ में जल ले लें।)

ॐ अस्य श्रीअर्गला स्तोत्र मन्त्रस्य विष्णुः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बा प्रीतये सप्तशती-पाठांगत्वेन जपे विनियोगः॥

(अब विनियोग मंत्र पढ़ने के बाद जल को पृथ्वी पर छोड़ दें।)

ॐ नमः चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥1॥

(इस विनियोग मंत्र को पढ़ने से पूर्व हाथ में जल ले लें।)

ॐकार रूपी परमात्मा का स्मरण करके इस श्री अर्गलास्तोत्रमन्त्र, जिसके ऋषि विष्णु हैं, अनुष्टुप् छंद है, श्रीमहालक्ष्मी देवता हैं, उसका श्रीजगदम्बा की प्रसन्नता के लिए सप्तशतीपाठ के अंग के रूप में जप-कार्य में विनियोग किया जाता है।

(अब विनियोग मंत्र पढ़ने के बाद जल को पृथ्वी पर छोड़ दें।)

ॐ चण्डिकादेवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेय जी कहते हैं- जयंती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधा-इन नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके! आपको मेरा नमस्कार हो॥1॥

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्ति हारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥2॥
मधु कैटभ विद्रावि विधातृ वरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥3॥
महिषासुर निर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥4॥
रक्त बीज वधे देवि चण्ड मुण्ड विनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥5॥

देवि चामुण्डे! आपकी जय हो। सम्पूर्ण प्राणिंयों की पीड़ा हरने वाली देवि! आपकी जय हो। सब में व्याप्त रहने वाली देवि! आपकी जय हो। कालरात्रि! आपको नमस्कार हो ॥2॥

मधु और कैटभ को मारने वाली तथा ब्रह्माजी को वरदान देने वाली देवि! आपको नमस्कार है। आप मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥3॥

महिषासुर का नाश करने वाली तथा भक्तों को सुख देने वाली देवि! आपको नमस्कार है। आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥4॥

रक्तबीज का वध और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली देवि! आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥5॥

शुम्भ स्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।6।।
वन्दितांघ्रि युगे देवि सर्व सौभाग्य दायिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।7।।
अचिन्त्य रूप चरिते सर्व शत्रु विनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।8।।
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।9।।

शुम्भ और निशुम्भ तथा धूम्रलोचन का मर्दन करने वाली देवि! आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।।6।।

सबके द्वारा वन्दित युगल चरणों वाली तथा संपूर्ण सौभाग्य प्रदान करने वाली देवि! आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।।7।।

देवि! आपके रूप और चरित्र अचिन्त्य हैं। आप समस्त शत्रुओं का नाश करने वाली हो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।।8।।

पापों को दूर करने वाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक आपके चरणों में सर्वदा मस्तक झुकाते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।।9।।

स्तुवद्भ्यो भक्ति पूर्वं त्वां चण्डिके व्याधि नाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥10॥
चण्डिके सततं ये त्वाम् अर्चयन्तीह भक्तितः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥11॥
देहि सौभाग्यम् आरोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥12॥
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बल मुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥13॥
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥14॥

रोगों का नाश करने वाली चण्डिके! जो भक्तिपूर्वक आपकी स्तुति करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥10॥

चण्डिके! इस संसार में जो भक्तिपूर्वक तुम्हारी पूजा करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और काम, क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥11॥

मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो। परम सुख दो, रूप दो, जय दो और मेरे काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥12॥

जो मुझसे द्वेष रखते हों, उनका नाश और मेरे बल की वृद्धि करो। रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥13॥

सुरा सुर शिरो रत्न निघृष्ट चरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥15॥
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥16॥
प्रचण्ड-दैत्य-दर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥17॥
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥18॥

देवि! मेरा कल्याण करो। मुझे उत्तम सम्पत्ति प्रदान करो। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।।14।।

अम्बिके! देवता और असुर-दोनों ही अपने माथे के मुकुट की मणियों को आपके चरणों पर घिसते रहते हैं। रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।।15।।

आप अपने भक्तजन को विद्वान, यशस्वी और लक्ष्मीवान बनाओ तथा रूप दो, जय दो, यश दो और उसके काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।।16।।

प्रचंड दैत्यों के दर्प का दलन करने वाली चण्डिके! मुझ शरणागत को रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।17।।

चतुर्मुख ब्रह्माजी के द्वारा प्रशंसित चार भुजाधारिणी परमेश्वरि! आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ।।18।।

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद् भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥19॥
हिमाचल सुता नाथसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥20॥
इन्द्राणी पति सद्भाव पूजिते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥21॥
देवि प्रचण्ड दोर्दण्ड दैत्य दर्प विनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥22॥

देवि! अम्बिके। भगवान विष्णु नित्य-निरन्तर भक्तिपूर्वक आपकी स्तुति करते रहते हैं। आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥19॥

हिमालय-कन्या पार्वती के पति महादेवजी के द्वारा प्रशंसित होने वाली परमेश्वरि! आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥20॥

शचीपति इन्द्र के द्वारा सद्भाव से पूजित होने वाली परमेश्वरि! आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥21॥

प्रचण्ड भुजदण्डों वाले दैत्यों का घमंड चूर करने वाली देवि! आप रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥22॥

देवि भक्तजनोद्दाम दत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥23॥
पत्नीं मनोरमां देहि मनो वृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥24॥
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
स तु सप्तशती संख्या वर माप्नोति सम्पदाम् ॥25॥

जय जय श्री देव्या अर्गलास्तोत्रम्

देवि अम्बिके! आप अपने भक्तजनों को सदा असीम आनंद प्रदान करती रहती हो। मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और काम-क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो ॥23॥

मन की इच्छा के अनुसार चलने वाली मनोहर पत्नी प्रदान करो, जो दुर्गम संसार सागर से तारने वाली तथा उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो ॥24॥

जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करके सप्तशती रूपी महास्तोत्र का पाठ करता है, वह सप्तशती की जपसंख्या से मिलने वाले श्रेष्ठ फल को प्राप्त होता है। साथ ही वह प्रचुर सम्पत्ति भी प्राप्त कर लेता है ॥25॥

श्री कीलकम्

(इस विनियोग मंत्र को पढ़ने से पूर्व हाथ में जल ले लें।)

ॐ अस्य श्रीकीलक मन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहा सरस्वती देवता, श्रीजगदम्बा प्रीत्यर्थं सप्तशती पाठांगत्वेन जपे विनियोगः।

(अब विनियोग मंत्र पढ़ने के बाद जल को पृथ्वी पर छोड़ दें।)

ॐ नमः चण्डिकायै॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्ध ज्ञान देहाय त्रिवेदी दिव्य चक्षुषे । श्रेयःप्राप्ति निमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे ॥1॥

(इस विनियोग मंत्र को पढ़ने से पूर्व हाथ में जल ले लें।)

ॐकार-रूपी परमात्मा का स्मरण करके इस श्रीकीलकमन्त्र, जिसके ऋषि शिव हैं, अनुष्टुप् छंद है, श्रीमहासरस्वती देवता हैं, उसका श्रीजगदम्बा की प्रसन्नता के लिए सप्तशतीपाठ के अंग के रूप में जप-कार्य में विनियोग किया जाता है।

(अब विनियोग मंत्र पढ़ने के बाद जल को पृथ्वी पर छोड़ दें।)

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है।

मार्कण्डेयजी कहते हैं-विशुद्ध ज्ञान ही जिनका शरीर है, तीनों वेद ही जिनके तीन दिव्य नेत्र हैं, जो कल्याण प्राप्ति के हेतु हैं तथा अपने मस्तक पर अर्धचन्द्र का मुकुट धारण करते हैं, उन भगवान शिव को नमस्कार है ॥1॥

सर्व मेतद् विजानीयाद् मन्त्राणामभिकीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥2॥
सिद्ध्यन्ति उच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्र मात्रेण सिद्ध्यति ॥3॥
न मन्त्रो नौषधं तत्र न किंचिद् अपि विद्यते ।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्व मुच्चाटनादिकम् ॥4॥

मंत्रों का जो अभिकीलक है अर्थात मंत्रों की सिद्धि में विघ्न उपस्थित करने वाले शाप रूपी कीलक का जो निवारण करने वाला है, उस सप्तशतीस्तोत्र को संपूर्ण रूप से जानना चाहिए, यद्यपि सप्तशती के अतिरिक्त अन्य मंत्रों के जप में भी जो निरंतर लगा रहता है, वह भी कल्याण का भागी होता है ॥2॥

उसके सभी उच्चाटन आदि कर्म सिद्ध होते हैं तथा उसे समस्त दुर्लभ वस्तुओं की भी प्राप्ति हो जाती है, तथापि जो अन्य मंत्रों का जप न करके केवल इस सप्तशती नामक स्तोत्र से ही देवी की स्तुति करते हैं, उन्हें स्तुति मात्र से हीं सच्चिदानंदस्वरूपिणी देवी सिद्ध हो जाती हैं ॥3॥

उन्हें अपने कार्य की सिद्धि के लिए मंत्र, ओषधि तथा अन्य किसी साधन के उपयोग की आवश्यकता नहीं रहती। बिना जप के ही उनके उच्चाटन आदि समस्त आभिचारिक कर्म सिद्ध हो जाते हैं ॥4॥

समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशंकाम् इमां हरः ।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्व मेव मिदं शुभम् ॥5॥
स्तोत्रं वै चण्डिकायाः तु तच्च गुप्तं चकार सः ।
समाप्तिः न च पुण्यस्य तां यथावत् नियन्त्रणाम् ॥6॥
सोऽपि क्षेम मवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः ।
कृष्णायां वा चतुर्दश्याम् अष्टम्यां वा समाहितः ॥7॥

इतना ही नहीं, उनकी संपूर्ण अभीष्ट वस्तुएं भी सिद्ध होती हैं। लोगों के मन में यह शंका थी कि 'जब केवल सप्तशती की उपासना से अथवा सप्तशती को छोड़कर अन्य मंत्रों की उपासना से भी समान रूप से सब कार्य सिद्ध होते हैं, तब इनमें श्रेष्ठ कौन सा साधन है?' लोगों की इस शंका को सामने रखकर भगवान शंकर ने अपने पास आए हुए जिज्ञासुओं को समझाया कि यह सप्तशती नामक संपूर्ण स्तोत्र ही सर्वश्रेष्ठ एवं कल्याणमय है ॥5॥

तदनन्तर भगवती चण्डिका के सप्तशती नामक स्तोत्र को महादेव जी ने गुप्त कर दिया। सप्तशती के पाठ से जो पुण्य प्राप्त होता है, उसकी कभी समाप्ति नहीं होती, किंतु अन्य मंत्रों के जपजन्य पुण्य की समाप्ति हो जाती है। अतः भगवान शिव ने अन्य मंत्रों की अपेक्षा जो सप्तशती की ही श्रेष्ठता का निर्णय किया, उसे यथार्थ ही जानना चाहिए ॥6॥

अन्य मंत्रों का जप करने वाला पुरुष भी यदि सप्तशती के स्तोत्र और जप का अनुष्ठान कर ले तो वह भी पूर्ण रूप से ही कल्याण का

ददाति प्रति गृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ।
इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥8॥
यो निष्कीलां विधा यैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥9॥
न चैवाप्य टत तस्य भयं क्वापीह जायते ।
नापमृत्यु वशं याति मृतो मोक्ष मवाप्नुयात् ॥10॥
ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्न मिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥11॥

भागी होता है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। जो साधक कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी को एकाग्रचित्त होकर भगवती की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है और फिर उसे प्रसाद रूप से ग्रहण करता है, उसी पर भगवती प्रसन्न होती हैं; अन्यथा उनकी प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती। इस प्रकार सिद्धि के प्रतिबन्धक रूप कील के द्वारा महादेव जी ने इस स्तोत्र को कीलित कर रखा है ॥7-8॥

जो पूर्वोक्त रीति से निष्कीलन करके इस सप्तशती स्तोत्र का प्रतिदिन स्पष्ट उच्चारणपूर्वक पाठ करता है, वह मनुष्य सिद्ध हो जाता है, वही देवी का पार्षद होता है और वही गंधर्व भी होता है ॥9॥

सर्वत्र विचरते रहने पर भी इस संसार में उसे कही भी भय नहीं होता। वह अपमृत्यु के वश में नहीं पड़ता तथा देह त्यागने के अनन्तर मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥10॥

अतः कीलक को जानकर उसका परिहार करके ही सप्तशती

सौभाग्यादि च यत् किंचिद् दृश्यते ललना जने ।
तत्सर्वं तत् प्रसादेन तेन जाप्य मिदं शुभम् ।।12।।
शनैः तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्ति रुच्चकैः ।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्य मेव तत् ।।13।।
ऐश्वर्यं यत्-प्रसादेन सौभाग्यारोग्य सम्पदः ।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ।।ॐ।।14।।

जय जय श्री देव्याः कीलकस्तोत्रम्

का पाठ आरंभ करें। जो ऐसा नहीं करता, उसका नाश हो जाता है। इसलिए कीलक और निष्कीलन का ज्ञान प्राप्त करने पर ही यह स्तोत्र निर्दोष होता है और विद्वान पुरुष इस निर्दोष स्तोत्र का ही पाठ आरंभ करते हैं ।।11।।

स्त्रियों में जो कुछ भी सौभाग्य आदि दृष्टिगोचर होता है, वह सब देवी के प्रसाद का ही फल है। अतः इस कल्याणमय स्तोत्र का सदा जप करना चाहिए ।।12।।

इस स्तोत्र का मन्द स्वर से पाठ करने पर सवल्प फल की प्राप्ति होती है और उच्च स्वर से पाठ करने पर पूर्ण फल की सिद्धि होती है। अतः उच्च स्वर से ही इसका पाठ आरंभ करना चाहिए ।।13।।

जिनके प्रसाद से ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, सम्पत्ति, शत्रुनाश तथा परम मोक्ष की भी सिद्धि होती है, उन कल्याणमयी जगदम्बा की स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करते? ।।14।।

श्री दुर्गा द्वात्रिंश-नाममाला

दुर्गा मां के 32 नाम माला का पाठ

एक समय की बात है ब्रह्मा आदि देवताओं ने पुष्प आदि विविध उपचारों से महेश्वरी दुर्गा का पूजन किया। इससे प्रसन्न होकर दुर्गतिनाशिनी दुर्गा ने कहा-'देवताओं! मैं तुम्हारे पूजन से संतुष्ट हूं, तुम्हारी जो इच्छा हो मांगो, मैं तुम्हें दुर्लभ से दुर्लभ वस्तु भी प्रदान करूंगी।' दुर्गा का यह वचन सुनकर देवता बोले-देवी! हमारे शत्रु महिषासुर को, जो तीनों लोकों के लिए कंटक था, आपने मार डाला, इससे संपूर्ण जगत स्वस्थ एवं निर्भय हो गया। आपकी ही कृपा से हमें पुनः अपने-अपने पद की प्राप्ति हुई है। आप भक्तों के लिए कल्पवृक्ष हैं, हम आपकी शरण में आए हैं। अतः अब हमारे मन में कुछ भी पाने की अभिलाषा शेष नहीं है। हमें सब कुछ मिल गया। तथापि आपकी आज्ञा है, इसलिए हम जगत की रक्षा के लिए आपसे कुछ पूछना चाहते हैं। महेश्वरी! कौन सा ऐसा उपाय है, जिससे शीघ्र प्रसन्न होकर आप संकट में पड़े हुए जीव की रक्षा करती हैं। देवेश्वरि! यह बात सर्वथा गोपनीय हो तो भी हमें अवश्य बताएं।

देवताओं के इस प्रकार प्रार्थना करने पर दयामयी दुर्गा देवी ने कहा-देवगण! सुनो-यह रहस्य अत्यंत गोपनीय एवं दुर्लभ है। मेरे 32 नामों की माला सब प्रकार की आपत्ति का विनाश करने वाली है। तीनों लोकों में इसके समान दूसरी कोई स्तुति नहीं है। यह रहस्य स्वरूप है। इसे बतलाती हूं, सुनो-

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्-विनिवारिणी ।
दुर्गम-छेदिनी दुर्ग-साधिनी दुर्ग-नाशिनी ॥
दुर्गतोद्धारिणी दुर्ग-निहन्त्री दुर्गमापहा ।
दुर्गम-ज्ञानदा दुर्ग-दैत्यलोक-दवानला ॥
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्म-स्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गम-विद्या, दुर्गम्-आश्रिता ॥
दुर्गमज्ञान-संस्थाना दुर्गम-ध्यानभासिनी ।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गम-अर्थस्वरूपिणी ॥
दुर्गमासुर-संहन्त्री दुर्गमायुध-धारिणी ॥
दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ।

दुर्गा, दुर्गार्तिशमनी, दुर्गापद्-विनिवारिणी, दुर्गम-छेदिनी, दुर्ग साधिनी, दुर्गनाशिनी ॥

दुर्गतोद्धारिणी, दुर्गनिहन्त्री, दुर्गमापहा, दुर्गमज्ञानदा, दुर्गदैत्य लोकदवानला ॥

दुर्गमा, दुर्गमालोका, दुर्गमात्म-स्वरूपिणी, दुर्गमार्गप्रदा, दुर्गम विद्या, दुर्गम्-आश्रिता ॥

दुर्गम-ज्ञान-संस्थाना, दुर्गम-ध्यानभासिनी, दुर्गमोहा, दुर्गमगा, दुर्गम-अर्थस्वरूपिणी ॥

दुर्गमासुर-संहन्त्री, दुर्गमायुध-धारिणी, दुर्गमांगी, दुर्गमता, दुर्गम्या, दुर्गमेश्वरी ॥

दुर्गभीमा, दुर्गभामा, दुर्गभा, दुर्गदारिणी ।
नामावलि मिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः ॥
पठेत् सर्वभयाद् मुक्तो भविष्यति न संशयः ॥

जय जय श्री दुर्गा द्वात्रिंश-नाममाला

दुर्गभीमा, दुर्गभामा, दुर्गभा, दुर्गदारिणी ।

जो मनुष्य मुझ दुर्गा की इस नाम माला का पाठ करता है, वह निसंदेह सब प्रकार के भय से मुक्त हो जाएगा।

'कोई शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा दुर्भेद्य बंधन में पड़ा हो, इन बत्तीस नामों के पाठ मात्र से संकट से छुटकारा पा जाता है। इसमें तनिक भी संदेह के लिए स्थान नहीं है। यदि राजा क्रोध में भरकर वध के लिए अथवा और किसी कठोर दण्ड के लिए आज्ञा दे दे या युद्ध में शत्रुओं द्वारा मनुष्य घिर जाए अथवा वन में व्याघ्र आदि हिंसक जन्तुओं के चंगुल में फंस जाए, तो इन बत्तीस नामों का एक सौ आठ बार पाठ मात्र करने से वह संपूर्ण भयों से मुक्त हो जाता है। विपत्ति के समय इसके समान भयनाशक उपाय दूसरा नहीं है। देवगण! इस नाम माला का पाठ करने वाले मनुष्यों की कभी कोई हानि नहीं होती। अभक्त, नास्तिक और शठ मनुष्य को इसका उपदेश नहीं देना चाहिए। जो भारी विपत्ति में पड़ने पर इस नामावली का हजार, दस हजार अथवा लाख बार पाठ स्वयं करता या ब्राह्मणों से कराता है वह सब प्रकार की आपत्तियों से मुक्त हो जाता है।

सिद्ध अग्नि में मधुमिश्रित सफेद तिलों से इन नामों द्वारा लाख बार हवन करे तो मनुष्य सब विपत्तियों से छूट जाता है। इस नाम माला का पुरश्चरण तीस हजार का है। पुरश्चरणपूर्वक पाठ करने से मनुष्य इसके द्वारा संपूर्ण कार्य सिद्ध कर सकता है। सुन्दर मिट्टी से मेरी अष्टभुजा मूर्ति बनावे, आठों भुजाओं में क्रमशः गदा, खड्ग, त्रिशूल, बाण, धनुष, कमल, खेट (ढाल) और मुद्गर धारण करावे। मूर्ति के मस्तक में चंद्रमा का चिह्न हो, उसके तीन नेत्र हों, उसे लाल वस्त्र पहनाया गया हो, वह सिंह के कंधे पर सवार हो और शूल से महिषासुर का वध कर रही हो, इस प्रकार की प्रतिमा बनाकर नाना प्रकार की सामग्रियों से भक्तिपूर्वक मेरा पूजन करे। मेरे उक्त नामों से लाल कनेर के फूल चढ़ाते हुए सौ बार पूजा करे और मंत्र-जप करते हुए पूए से हवन करे। भांति-भांति के उत्तम पदार्थ भोग लगावे। इस प्रकार करने से मनुष्य असाध्य कार्य को भी सिद्ध कर लेता है। जो मानव प्रतिदिन मेरा भजन करता है वह कभी विपत्ति में नहीं पड़ता।

देवताओं से ऐसा कहकर मां जगदम्बा वहीं अंतर्धान हो गईं। दुर्गा जी के इस उपाख्यान को जो सुनते हैं, उन पर कोई विपत्ति नहीं आती।

श्री सिद्धकुंजिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिका स्तोत्रम् उत्तमम् ।
येन मन्त्र प्रभावेण चण्डी जापः शुभो भवेत् ॥1॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥2॥
कुंजिका पाठ मात्रेण दुर्गा पाठ फलं लभेत् ।
अति गुह्यतरं देवि देवानाम् अपि दुर्लभम् ॥3॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्व योनि रिव पार्वति ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भन उच्चाटनादिकम् ।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुंजिका स्तोत्रम् उत्तमम् ॥4॥

शिवजी बोले- देवी! सुनो। मैं उत्तम कुंजिकास्तोत्र का उपदेश करूंगा, जिस मंत्र के प्रभाव से देवी का जप सफल होता है ॥1॥

कवच, अर्गला, कीलक, रहस्य, सूक्त, ध्यान, न्यास यहां तक कि अर्चन भी (आवश्यक) नहीं है ॥2॥

केवल कुंजिका के पाठ से दुर्गा पाठ का फल प्राप्त हो जाता है। यह अत्यंत गुप्त और देवों के लिए भी दुर्लभ है ॥3॥

हे पार्वती! इसे स्वयोनि की भांति प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिए। यह उत्तम कुंजिका स्तोत्र केवल पाठ के द्वारा मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन आदि उद्देश्यों को सिद्ध करता है ॥4॥

श्री मंत्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

नमस्ते रुद्र रूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।
नमः कैटभ हारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥5॥
नमस्ते शुम्भ हन्त्र्यै च निशुम्भासुर घातिनि ।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ॥6॥
ऐंकारी सृष्टि रूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ।
क्लींकारी काम रूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥7॥

हे रुद्रस्वरूपिणी! आपको नमस्कार। हे मधु दैत्य को मारने वाली! आपको नमस्कार है। कैटभविनाशिनी को नमस्कार। महिषासुर को मारने वाली देवी! आपको नमस्कार है ॥5॥

शुम्भ का हनन करने वाली और निशुम्भ को मारने वाली! आपको नमस्कार है। हे महादेवि! मेरे जप को जाग्रत और सिद्ध करो ॥6॥

'ऐंकार' के रूप में सृष्टिस्वरूपिणी, 'ह्रीं' के रूप में सृष्टि पालन करने वाली, 'क्लीं' के रूप में क़ामरूपिणी (तथा निखिल ब्रह्मांड)-की बीजरूपिणी देवी! आपको नमस्कार है ॥7॥

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वर-दायिनी ।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥8॥
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वाग् अधीश्वरी ।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥9॥
हुं हुं हुंकार-रूपिण्यै जं जं जं जम्भ नादिनी ।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥10॥
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं
धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥11॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥12॥

चामुण्डा के रूप में चण्डविनाशिनी और 'यैकार' के रूप में आप वर देने वाली हो। 'विच्चे' रूप में आप नित्य ही अभय देती हो। आप इस मंत्र का स्वरूप हो ॥8॥

'धां धीं धूं' के रूप में धूर्जटी (शिव)-की आप पत्नी हो। 'वां वीं वूं' के रूप में आप वाणी की अधीश्वरी हो। 'क्रां क्रीं क्रूं' के रूप में कालिका देवी, 'शां शीं शूं' के रूप में मेरा कल्याण करो॥9॥

'हुं हुं हुंकार' स्वरूपिणी, 'जं जं जं' जम्भनादिनी, 'भ्रां भ्रीं भ्रूं' के रूप में हे कल्याणकारिणी भैरवी भवानी! आपको बार-बार प्रणाम ॥10॥

'अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं' इन सबको तोड़ो और दीप्त करो, करो स्वाहा ॥11॥

इदं तु कुंजिका-स्तोत्रं मन्त्र-जागर्ति-हेतवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥
यस्तु कुंजिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिः अरण्ये रोदनं यथा ॥

जय जय श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुंजिकास्तोत्रम्

'पां पीं पूं' के रूप में आप पार्वती पूर्णा हो। 'खां खीं खूं' के रूप में तुम खेचरी (आकशचारिणी) अथवा खेचरी मुद्रा हो। 'सां सीं सूं' स्वरूपिणी सप्तशती देवी के मंत्र को मेरे लिए सिद्ध करो ।।12।।

यह कुंजिका स्तोत्र मंत्र को जगाने के लिए है। इसे भक्तिहीन पुरुष को नहीं देना चाहिए। हे पार्वती! इसे गुप्त रखो। हे देवी! जो बिना कुंजिका के सप्तशती का पाठ करता है उसे उसी प्रकार सिद्धि नहीं मिलती जिस प्रकार वन में रोना निरर्थक होता है।

जय जय श्री श्रीरुद्रयामल के गौरीतंत्र में
शिव पार्वती संवाद सिद्धकुंजिकास्तोत्र

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज ने आपको जो उत्कीलन, शापोद्धार, निष्कीलन और परिहार तथा मृत संजीवनी मंत्र का जो विशेष शास्त्रोक्त विधान बताया है उसे पुनः करें। जिन्होंने यह शास्त्रोक्त विधान अब तक ग्रहण नहीं किया है वे इसे परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज से ग्रहण करके ही इसका पाठ करें। भगवान शिव का कथन है कि जो बिना शापोद्धार, परिहार व निष्कीलन के मां दुर्गा का पाठ करता है उसे उसी प्रकार सिद्धि नहीं मिलती जिस प्रकार जंगल में रोना निरर्थक माना जाता है। इस प्रकार भगवान शिव द्वारा शास्त्रोक्त विधि से पाठ करने के बाद ही मां भगवती की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

क्षमा प्रार्थना

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽय मिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।1।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ।।2।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत् पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।।3।।
अपराध-शतं कृत्वा जगदम्बेति च उच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ।।4।।

परमेश्वरि! मेरे द्वारा रात-दिन सहस्रों अपराध होते रहते हैं। 'यह मेरा दास है'-यों समझकर मेरे उन अपराधों को आप कृपापूर्वक क्षमा करो ।।1।।

परमेश्वरि! मैं आवाहन नहीं जानता, विजर्सन करना नहीं जानता तथा पूजा करने का ढंग भी नहीं जानता। क्षमा करो।।2।।

देवि! सुरेश्वरि! मैंने जो मंत्रहीन, क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है, वह सब आपकी कृपा से पूर्ण हो।।3।।

सैकड़ों अपराध करके भी जो आपकी शरण में जा 'जगदम्ब' कह कर पुकारता है, उसे वह गति प्राप्त होती है, जो ब्रह्मादि देवताओं के लिए भी सुलभ नहीं है ।।4।।

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तः त्वां जगदम्बिके ।
इदानीम् अनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥5॥
अज्ञानाद् विस्मृतेः भ्रान्त्या यद् न्यूनम् अधिकं कृतम् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥6॥
कामेश्वरि जगद् मातः सच्चिदानन्द विग्रहे ।
गृहाणार्चा मिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥7॥
गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणा स्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिः भवतु मे देवि त्वत् प्रसादात् सुरेश्वरि ॥8॥

जय जय श्री दुर्गार्पणमस्तु

जगदम्बिके! मैं अपराधी हूं, किंतु आपकी शरण में आया हूं। इस समय दया का पात्र हूं। आप जैसा चाहो, वैसा करो ॥5॥

देवि! परमेश्वरि! अज्ञान से, भूल से अथवा बुद्धि भ्रांत होने के कारण मैंने जो न्यूनता या अधिकता कर दी हो, वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होवो ॥6॥

सच्चिदानंदस्वरूपा परमेश्वरि! जगन्माता कामेश्वरि! आप प्रेमपूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न रहो ॥7॥

देवि! सुरेश्वरि! आप गोपनीय से भी गोपनीय वस्तु की रक्षा करने वाली हो। मेरे निवेदन किए हुए इस जप को ग्रहण करो। आपकी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो ॥8॥

श्री अम्बा जी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी ।
आपको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ॥1॥
जय अम्बे...

मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको ।
उज्जवल से दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ॥2॥
जय अम्बे...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै ॥3॥
जय अम्बे...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी ।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुखहारी ॥4॥
जय अम्बे...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती ॥5॥
जय अम्बे...

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥6॥
जय अम्बे...

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥7॥
जय अम्बे...

ब्रह्माणी, रुद्राणी आप कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, आप शिव पटरानी ॥8॥
जय अम्बे...

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूं ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥9॥
जय अम्बे...

आप ही जग की माता, आप ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पति करता ॥10॥
जय अम्बे...

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी ।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर नारी ॥11॥
जय अम्बे...

कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती ।
श्री मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योति ॥12॥
जय अम्बे...

श्री अम्बेजी की आरति जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥13॥
जय अम्बे...

श्री देवी जी की आरती

जगजननी जय! जय!! (मां! जगजननी जय! जय!!)
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!!

जगजननी...

आप ही सत चित सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
सत्य सनातन सुन्दर पर शिव सुर भूपा ॥1॥

जगजननी...

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
अमल अनन्त अगोचर अज आनंदराशी ॥2॥

जगजननी...

अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी ।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर संहारकारी ॥3॥

जगजननी...

आप विधिवधू, रमा, आप उमा, महामाया ।
मूल प्रकृति विद्या आप, आप जननी, जाया ॥4॥

जगजननी...

राम, कृष्ण आप, सीता, ब्रजरानी राधा ।
आप वांछाकल्पद्रुम हारिणि सब बाधा ॥5॥

जगजननी...

दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा ।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा ॥6॥

जगजननी...

आप परधामनिवासिनि महाविलासिनि आप ।
आप ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि आप ॥7॥

जगजननी...

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या आप शोभाऽऽधारा ।
विवसन विकट सरूपा, प्रलयमयी धारा ॥8॥

जगजननी...

आप ही स्नेह सुधामयि, आप अति गरलमना ।
रत्नविभूषित आप ही, आप ही अस्थि तना ॥9॥

जगजननी...

मूलाधार निवासिनि, इह पर सिद्धिप्रदे ।
कालातीता काली, कमला आप वरदे ॥10॥

जगजननी...

शक्ति शक्तिधर आप ही नित्य अभेदमयी ।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी ॥11॥

जगजननी...

हम अति दीन दुखी मां! विपत जाल घेरे ।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक आपके ॥12॥

जगजननी...

निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै ।
करुणा कर करुणामयि! चरण शरण दीजै ॥13॥

जगजननी...

प्रकाशक

नारायण शक्तिपीठ

सी-27, द्वितीय तल, ग्रेटर कैलाश एन्क्लेव-1,

नई दिल्ली-110048

हेल्पलाइन नं. : 011-49945995

दक्षिणा भेंट: श्रद्धानुसार